ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय

पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)

फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे **निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून**

वर्षः 26	अंकः 30	बुलेटिन अवधिः 14–18 अप्रैल, 2017	दिनःबृहस्पतिवार	दिनाँकः 13 अप्रैल 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल				
	14–04–2017	15–04–2017	16–04–2017	17–04–2017	18–04–2017
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	26	27	27	27	28
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	15	14	14	14	15
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	मध्यम बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	80	85	80	80	80
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	50	45	40	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	08	08	10	08	10
वायु की दिशा	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व

आगामी पॉच दिनो में मौसम शुष्क रहने तथा आसमान में हल्के बादल छाये रहने के साथ हवा के तेज गति **से दक्षिण–पूर्व दिशा से चलने की सम्भावना है।**

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (6 से **12 अप्रैल** 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान साफ रहने के साथ घने बादल छाये रहे व 2.4 मि0मी0 वर्षा हुई तथा अधिकतम तापमान 21.2 से 25.5 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 5.5 से 11.3 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- ❖ गेहूँ एवं दलहनी फसलों की कटाई एवं मड़ाई का कार्य करें।
- ❖ बसंतकालीन गन्ने में खरपतवार के नियंत्रण हेतु बुवाई के तीन दिन के अंदर या 15–20 दिन पर 2–3 पत्ति अवस्था

में वैलपार के–4 की 2 कि0ग्रा0 मात्रा को 800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

- ❖ गन्ने में निराई–गुड़ाई के उपरांत सिंचाई के बाद नत्रजन का प्रयोग करें।
- ❖ चारा फसलों में सिंचाई का प्रबंध करें।
- ❖ बसंतकालीन गन्ने में कल्ले निकलने की अवस्था में गुड़ाई करने के एक हफ्ते बाद सिंचाई करें एवं मैट्रीब्यूजीन/एट्राजीन की 2 कि0ग्रा0 मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ शरदकालीन गन्ने में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा नत्रजन की बची हुई 1/3 मात्रा का प्रयोग करें व खरपतवारों का नियंत्रण करें।
- ❖ गेहूँ की फसल मे चूर्णिलासिता का प्रकोप दिखाई पड़ने पर प्रोपीकोनाजोल 25 ई0 सी0 का 1 मिली/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ सरसों की फसल की कटाई एवं मड़ाई करें।

उद्यान प्रबन्धः

- ❖ मध्यम पर्वतीय क्षेत्रों में यदि राई, बंदगोभी, फूलगोभी या मूली की खड़ी फसल है तो ओले से बचाने के लिए नाइलोन जाली का प्रयोग करें।
- ❖ प्याज में यदि ऊपर से पत्तियाँ पीली पड़ रही हो तो नियंत्रण हेतु डिफीनोकोनाजोल का 1 मि0ली0/लीटर + फिप्रोनिल 5 प्रतिशत एस सी 1 लीटर प्रति हैक्टेयर एवं स्टीकर 0.5 मिली0 प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ मिर्च एवं टमाटर की उपरी पत्तियो पर बारीक चितकबरे धब्बे दिखाई देने पर सर्वांगी कीटनाशी का 10 से 15 दिन के अन्तराल पर नियमित छिड़काव करे।
- ❖ फ्रासबीन एवं लोबिया में नये पौधे सूखने दशा में कार्बनडाजिम 1 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर जड़ो की सिचाई करे। यदि बड़े पौधो में पत्ते पीले पड़ने एवं झुलसने की दशा में इसी रसायन का पत्तियो पर छिड़काव करे।
- ❖ पॉलीहाउस में तैयार खीरा एवं चप्पन कद्दू की पौध का रोपण मुख्य खेत में करें। ध्यान रहे थैलियों की मिट्टी प्लास्टिक अलग करते समय न हिले–डुले।
- ❖ समुद्र तल से 6000 फीट से कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों मे यदि टमाटर, बैंगन एवं शिमला मिर्च की पौध तैयार हो गयी हो का प्रतिरोपण अपराह्न में करें। प्रतिरोपण के पश्चात् सिंचाई कर लें। नमी संरक्षण के लिए प्रतिरोपित पौध को अस्थानीय स्तर पर उपलब्ध जैविक पलवार पदार्थों की एक मोटी परत हर पौंध में बिछा दें।
- ❖ घाटी क्षेत्रों में जहाँ मटर की फसल तैयार हो गयी हो में हरी फलियों की तुड़ाई करें।
- ❖ यदि आलू की फसल अंकुरित हो गयी है तथा 20–25 दिन की फसल हो तो उसमें यूरिया की टॉप ड्रेसिंग कर मिट्टी चढ़ाए। नमी संरक्षण होतु नालियों में 8–10 से0मी0 पलवार पदार्थ की मोटी परत बिछा दें।
- ❖ सिंचित घाटी क्षेत्रो में सब्जी फ्रासबीन किस्म अर्का कोमल या कन्टेण्डर की वुबाई करे।
- ❖ बाग अथवा क्यारी में नमी का उचित प्रबंध करें।
- ❖ मध्यम एवं निचले पर्वतीय क्षेत्रों में आडू के पर्णकुंचन रोग की रोक–थाम के लिए कीटनाशक रसायनों का द्वितीय छिड़कारें।
- ❖ नर्सरी में ग्राफ्टिंग किये गये पौधों में मूल वृंत से निकलने वाली शाखाओं को तोड़कर अलग करें।
- ❖ फल अच्छादन होने के उपरान्त मैंगो हौपर के प्रकोप होने की स्थिति में इमिडाक्लोरपिड का 3 मि0ली0 /10लीटर के हिसाब से आम में छिड़काव करें।
- ❖ आड़ू, प्लम, खुमानी आदि गुठलीदार फलों में फल अच्छादन हो गया है तो पेड़ों को ओलो से बचाने के लिए जहाँ तक संभव हो ओला अवरोधी जालियों का प्रयोग करें।
- ❖ ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में एप्पल स्कैब रोग के नियंत्रण के लिए आवश्यक छिड़काव करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- ❖ मुर्गियों के अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए उनके आवास के तापमान का विशेष ध्यान रखें, उन्हें खाने के लिए सन्तुलित आहार दें तथा साफ–सुथरा एवं ताजा जल उपलब्ध करायें।
- ❖ पशुओं के बैठने का स्थान समतल होता चाहिए ताकि उनकी उत्पादन क्षमता प्रभावित न हो तथा इस समय नवजात पशुओं के रख–रखाव पर विशेष ध्यान दें। बैठने का स्थान समतल ना होने पर पशु खड़ा रहेगा जिससे वह तनाव में आ सकता है और उत्पादन क्षमता प्रभावित होगी।
- ❖ भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविट्‌यूलरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग

काली मिट्टी के समान होना, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरो का गोबर के साथ आना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान की जा सकती है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं तथा निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार तत्काल उपचार करायें।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर